प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - 2, 2021-22

द्वितीय सत्र

विषय- हिंदी 'ए' (कोड-002)

निर्धारित समय : 2 घंटे **पूर्णांक : 40**

सामान्य निर्देश :

- **इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं— खंड 'क' और खंड 'ख'**
- **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए।**
- **लेखन कार्य में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखिए।**
- **खंड-'क' में कुल 3 प्रश्न हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए इनके उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।**
- **खंड-'ख' में कुल 4 प्रश्न हैं। सभी प्रश्नों के साथ विकल्प दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए चारों प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

खण्ड–'क'

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए— **[2 × 4 = 8]**

(क) गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का असर जानने वाले नेता कौन थे?

(ख) "साँवले सपनों की याद" पाठ में सालिम अली प्रकृति और पर्यावरण के प्रति चिंतित थे ? पर्यावरण को बचाने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों का उल्लेख कीजिए। AI

(ग) प्रेमचंद जैसे साहित्यकार की फोटो में उनके फटे जूतों को देखकर परसाई जी की मनोदशा पर टिप्पणी कीजिए। AI

(घ) "सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं" पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में दीजिए— **[2 × 3 = 6]**

(क) 'कैदी और कोकिला' कविता के अनुसार लिखिए कि तत्कालीन शासक स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे? AI

(ख) 'कैदी और कोकिला' कविता में कवि ने शासन की करनी को काली क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए। AI

(ग) बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है ?

(घ) बच्चे काम पर किस समय जाते हुए दिखाई देते हैं ? क्या कवि की पीड़ा यही है कि वे उस समय काम पर जा रहे हैं या कुछ और भी ? लिखिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए— **[3 × 2 = 6]**

(क) कहा जाता है कि महिलाएँ शक्तिशाली होंगी तो समाज भी शक्तिशाली बनेगा। समाज में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए अपनी ओर से सुझाव दीजिए। AI

(ख) अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

(ग) 'टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब और माटी वाली वृद्ध महिला के मध्य हुई बातचीत इस प्रकार की बाँध योजनाओं पर कैसे प्रश्न चिह्न लगाती है? समझाइए।

खण्ड–'ख'

रचनात्मक लेखन—

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए— **[5]**

(क) परोपकार

संकेत-बिन्दु—(i) परोपकार का अर्थ, (ii) परोपकार से लाभ, (iii) परोपकारी व्यक्तियों के उदाहरण।

(ख) दूरदर्शन

संकेत-बिन्दु—(i) दूरदर्शन की भूमिका, (ii) शैक्षणिक लाभ, (iii) विकास में योगदान।

(ग) आतंकवाद के दुष्परिणाम

संकेत-बिन्दु—(i) आतंकवाद के प्रसार के कारण, (ii) भारत और विश्व में आतंकवाद, (iii) निदान के उपाय।

5. आपको छात्रावास में रहकर पढ़ते हुए कुछ परेशानी हो रही है अत: आप अलग रहकर पढ़ाई करना चाहते हैं। इस तथ्य से अपने भाई साहब को अवगत कराते हुए उनसे निवेदन कीजिए कि वे आपके लिए विद्यालय के आसपास ही एक कमरे की व्यवस्था करने का कष्ट करें। **[5]**

अथवा

आपके क्षेत्र में अनाधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।

6. (क) सचिन के रिटायरमेन्ट को लेकर आपके और आपके दोस्त के मध्य हुए संवाद को लिखिए। **[2½ × 2 = 5]**

अथवा

'शिक्षक दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम को देखकर विद्यार्थी प्रसन्न होते हैं। ऐसे ही किन्हीं दो विद्यार्थियों के मध्य हुए वार्तालाप को संवाद शैली में लिखिए।

(ख) बिजली की बार-बार कटौती से उत्पन्न स्थिति से परेशान महिलाओं की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

अथवा

नए विद्यालय में अपने पुत्र का दाखिला दिलाने गए अभिभावक और प्रधानाचार्य के मध्य हुए वार्तालाप का संवाद लेखन कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में लघु कथा लिखिए— **[2½ × 2 = 5]**

(क) तीर्थयात्रा

(ख) एकता में बल

●●

उत्तरमाला

खण्ड–`क'

1. **(क)** चौधरी चरण सिंह किसान राजनेता के रूप में प्रसिद्ध थे। उनका बचपन गाँव में ही बीता था इसीलिए वे गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद की सौंधी सुगंध से परिचित थे। **[2]**

(ख) सालिम अली बड़े उदार, पक्षी–प्रेमी और प्रकृति–विज्ञानी थे। उन्होंने केरल की 'साइलेंट वैली' को बचाने हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री चौ. चरणसिंह से बात की, लेह–लद्दाख के पक्षियों के संरक्षण के लिये कार्य भी किये। **[2]**

(ग) लॉरेंस प्रकृति–प्रेमी थे। उनका पूरा जीवन एक खुली किताब के समान था। उनके जीवन से सम्बन्धित कोई बात छिपी हुई नहीं है। छत पर बैठने वाली गौरैया के साथ भी वे काफी समय बिताते थे। गौरैया का व्यवहार भी मित्रवत् था। तभी उनकी पत्नी ने यह बात कही। **[2]**

(ग) प्रेमचंद जैसे महान कथाकार, उपन्यास–सम्राट, युग–प्रवर्तक की ऐसी बदहाल दशा की कल्पना परसाई जी ने नहीं की थी। परन्तु एक महान साहित्यकार के इस दुख को स्वयं महसूस करते हुए परसाई जी द्रवित होकर रोना चाहते थे।

[सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017] [2]

व्याख्यात्मक हल:

प्रेमचंद जैसे साहित्यकार की फोटो में उनके फटे जूते देखकर परसाई जी का मन रोने को करता है। उन्हें प्रेमचन्द जैसे महान साहित्यकार की बदहाली से बहुत दुख होता है। उनके पास विशेष अवसरों पर पहनने के लिए भी अच्छे कपड़े और जूते नहीं थे। उनकी आर्थिक दुरावस्था की कल्पना से लेखक बहुत अधिक दुखी हो रहे थे।

(घ) सभी नदियाँ पहाड़ को फोड़कर रास्ता नहीं बनातीं 'अपितु रास्ता बदलकर निकल जाती हैं।'
समाज की बुराइयों व रूढ़िवादी परम्पराओं को देखकर भी बहुत से विचारवान लोग कुछ नहीं करते, चुप रहकर मूकदर्शक बने रहते हैं। प्रेमचंद जी ने ऐसे लोगों पर व्यंग्य किया है, यह उनका ठोकर मारना था। **[सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017] [2]**

व्याख्यात्मक हल:

लेखक ने समाज की कुरीतियों से न जूझने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। वह कहते हैं कि उनसे संघर्ष करने की अपेक्षा प्रेमचंद को अपना मार्ग ही बदल लेना चाहिए था, जिससे उन्हें कष्ट भी नहीं होता और राह भी आसान हो जाती।

सामान्य त्रुटियाँ

- विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर अनुमान व कल्पना के आधार पर देने में असमर्थ रहते हैं।
- विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देते समय जल्दबाजी करते हैं और प्रश्नों को ठीक प्रकार से नहीं समझते।

निवारण

- विद्यार्थियों को प्रश्नों को भली-भाँति समझकर ही उनके उत्तर लिखने चाहिए। उत्तर देते समय जल्दबाजी नहीं दिखानी चाहिए।
- पाठ की विषय-वस्तु को समझने का प्रयास करना चाहिए।

2. **(क)** तत्कालीन अंग्रेज़ी शासक स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ अत्याचार एवं दमनपूर्ण व्यवहार करते थे। उन्हें डाकू, बदमाशों के साथ जंजीरों में जकड़कर रखा जाता था, भरपेट भोजन नहीं दिया जाता था तथा कोल्हू में बैल की तरह जोता जाता था। **[2]**

(ख) 'कैदी और कोकिला' कविता में कवि ने अंग्रेजी शासन की करनी को काली इसलिए कहा है क्योंकि वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। उनके अन्याय, अत्याचार, दमन के कारण कवि ने शासन की करनी को काली कहा है। **[2]**

(ग) बच्चों को काम पर भेजना उनके साथ घोर अन्याय है। बचपन भविष्य की नींव होता है। इस पर ही देश का भविष्य निर्भर करता है। जिस समाज में बच्चों के विकास को कुचला जाता है वह समाज अन्यायी तथा अविकसित है तथा पिछड़ेपन का जीता-जागता उदाहरण है जो किसी बड़े हादसे के ही समान है। **[2]**

(घ) कोहरे से ढकी सड़क पर एकदम भोर के समय बच्चे काम पर जा रहे हैं, यह देखकर कवि चिंतित एवं व्यग्र है। उसकी चिन्ता उनके अच्छे पालन-पोषण, शिक्षण तथा शारीरिक-मानसिक विकास की भी है जिस हेतु वह सरकार एवं समाज को सचेत करता है। **[2]**

3. **(क)** समाज में महिलाओं की स्थिति को दृढ़ करने के लिए सबसे पहले उनका शिक्षित होना अनिवार्य है। उसके साथ ही समाज को जागरूक किया जा सकता है। अपनी आत्मरक्षा के उपाय खुद करने हैं ऐसी हिम्मत व साहस की भावना भर कर उनका आत्मबल बढ़ाया जा सकता है। लिंगभेद को समाप्त करके भी महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। **[3]**

(ख) रामस्वरूप चाहते थे कि उनकी बेटी उमा पाउडर वगैरह लगाकर सज-धज कर लड़के वालों के सामने दिखावटी सामान की तरह प्रस्तुत हो जाए। उमा को यह सब पसंद नहीं था। वे उमा की पढ़ाई-लिखाई भी छिपा रहे थे। रामस्वरूप ये सब गलत कर रहे थे क्योंकि इस तरह झूठ के आधार पर रिश्तों को बनाना उचित नहीं। इससे लड़की का सारा जीवन बर्बाद होने का डर रहता है। यदि हम समाज में बदलाव या सुधार लाना चाहते हैं, तो नारी शिक्षा और स्वतन्त्रता को महत्व देना चाहिए। दहेज जैसी बुरी प्रथा का विरोध करना चाहिए। **[3]**

(ग) टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब और माटी वाली वृद्ध महिला के मध्य हुई बातचीत इस प्रकार की बाँध योजनाओं से उत्पन्न विस्थापन की समस्या पर बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न लगाती है। टिहरी बाँध बनाने में हजारों को रोजगार, खेत, घर, नौकरी, मजदूरी से हाथ धोना पड़ा। उनके सामने रोजगार और घर की समस्या उत्पन्न हो गई है। विस्थापितों के लिए केवल सरकार का ही नहीं, हम भारतवासियों का सहयोग भी अनिवार्य है तभी इस प्रकार की योजनाएँ सफल हो सकेंगी। **[3]**

सामान्य त्रुटियाँ

- अधिकांश विद्यार्थी टिहरी बाँध परियोजना से सम्बन्धित विस्थापन की समस्या के कारणों को स्पष्ट रूप से लिखने में असफल रहते हैं।
- विद्यार्थी प्रश्न के उत्तर में मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान नहीं देते तथा अत्यधिक विस्तार से उत्तर लिखते हैं।

निवारण

- विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए ताकि प्रश्नों के उत्तर सुचारु रूप से दे सकें।
- विद्यार्थियों को व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु मुख्य बिन्दुओं का अध्ययन करना आवश्यक है।

खण्ड–'ख'

4. **(क)**

परोपकार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परस्पर सहयोग उसके जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। परस्पर सहयोग के अभाव में समाज का अस्तित्व ही नहीं रह जाता। व्यासजी ने कहा है–'परहित साधन ही पुण्य है और दूसरों को कष्ट देना ही पाप है।' परोपकार के समान दूसरा धर्म नहीं है। परोपकार का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रकृति में देखने को मिलता है, मेघ दूसरों के लिए वर्षा करते हैं, वायु दूसरों

के लिए चलती है तथा सरिता दूसरों की प्यास बुझाने के लिए बहती है। पुष्प अपनी सुगन्ध बिखेर कर, वृक्ष स्वयं धूप सहकर और पथिकों को छाया प्रदान करके हमें परोपकार की प्रेरणा देते प्रतीत होते हैं। परोपकार करने वाला मनुष्य पूज्य बन जाता है। परहित के कारण गाँधीजी, सुकरात, राजा शिवि तथा ऋषि दधीचि ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। बुद्ध, महावीर जैसे महापुरुषों ने तप्त मानवता को परोपकार का पावन मार्ग दिखाया। पंचशील का सिद्धान्त भी परोपकार की ही देन है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन उपकारी महापुरुषों के जीवन का अनुकरण करें। यही हमारे जीवन का सबसे बड़ा धर्म है, परन्तु हमें यह परोपकार केवल सेवा की भावना को ही लेकर करना चाहिए। परोपकार करते समय तो हमें यह अभिमान भी नहीं होना चाहिए कि हमने व्यक्ति के लिए यह भलाई का कार्य किया है। नि:स्वार्थ भाव से हमें परोपकार के कार्यों में समय लगाना चाहिए।

(ख) **दूरदर्शन**

दूरदर्शन आधुनिक युग में मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन है जो मानव को मनोरंजन देने के साथ-साथ प्रेरणा और शिक्षा प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम घर बैठे लाखों मील दूर की घटनाओं को अपनी आँखों से देख सकते हैं। दूरदर्शन के दो पहलू हैं—(i) सदुपयोग और (ii) दुरुपयोग। दूरदर्शन के अच्छे कार्यक्रमों का हमारे मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, हम उससे प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। दूसरी ओर इसमें दिखाई गई हिंसा, हत्या, बलात्कार, अश्लीलता आदि कार्यक्रम समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। आज के विद्यार्थी वर्ग पर दूरदर्शन का प्रभाव सर्वाधिक है, वे अपने विद्यार्थी जीवन के अमूल्य समय का दुरुपयोग व्यर्थ के मनोरंजक कार्यक्रम देखने में करते हैं। आजकल दूरदर्शन पर कई नए कार्यक्रम, रियल्टी शो, ज्ञानवर्धक विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं, जिन्हें देखने पर ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। भविष्य में दूरदर्शन ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के प्रचार और प्रसार का साधन होने के साथ मनोरंजन के रूप में आपत्तिजनक कार्यक्रम पर रोक लगाएगा ऐसी आशा है। दूरदर्शन के द्वारा नवीन जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं तथा विद्यार्थियों का मानसिक विकास होता है।

(ग) **आतंकवाद के दुष्परिणाम**

आतंकवाद भय उत्पन्न करने की प्रक्रिया है। यह एक प्रकार का उन्माद तो है ही साथ ही दूसरों की बर्बादी का प्रयास भी है। आजादी के बाद देश में अनेक आतंकवादी संगठनों द्वारा आतंकवादी हिंसा का प्रचार-प्रसार किया गया है। आज हमारा देश ही नहीं वरन् सारा विश्व आतंकवाद की छाया में साँस ले रहा है। 13 दिसम्बर, 2001 को भारत के संसद भवन पर आतंकियों द्वारा हमला किया गया। 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर भी हमला हुआ। इस तरह पूरा संसार आतंकवाद की चपेट में है। इस समस्या का वास्तविक हल ढूँढ़ने के लिए सर्वप्रथम सरकार को अपनी गुप्तचर एजेंसियों को सशक्त और विशेष सक्रिय बनाना चाहिए। सीमा पार से प्रशिक्षित आतंकवादियों व हथियारों के आने पर कड़ी चौकसी रखनी होगी। लोगों को गुमराह होने से रोकना होगा व विश्वास की भावना जगानी होगी। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मिलकर प्रयास करने होंगे। **[5]**

5. **(क)** 23ए, गोरखराय छात्रावास
आगरा
दिनांक 15.9.××
आदरणीय भाई साहब,
सादर चरण स्पर्श।
मैं आपकी कृपा पाकर कृतार्थ हूँ। आपने अपनी सुविधाओं में कटौती कर मुझे छात्रावास में रहकर अपनी आगे की पढ़ाई करने की सुविधा प्रदान की है, किन्तु यहाँ छात्रावास में मेरा अध्ययन सुचारु रूप से नहीं चल पा रहा है क्योंकि आसपास रहने वाले कई छात्र सिनेमा आदि के गीत बजाते रहते हैं तथा दिन भर हो-हल्ला करते रहते हैं।
अच्छा हो, यदि आप कॉलेज के पास ही एक कमरे की व्यवस्था मेरे लिए कर दें जिससे मैं अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर केन्द्रित कर सकूँ और उन अवांछनीय तत्वों से दूर भी रह सकूँ।
मुझे पूरा विश्वास है कि आप यह प्रबंध अवश्य कर देंगे। पढ़ाई में विघ्न न आता तो आपसे यह कहने का साहस भी न कर सकता। आदरणीय माताजी व पिताजी को चरण स्पर्श एवं चिन्टू को स्नेह दें। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।
आपका अनुज,
कुशाग्र

(ख) सेवा में,
जिलाधिकारी महोदय,
अ.ब.स. जिला,
अ.ब.स. नगर।
दिनांक : 03/04/20XX

विषय : अनाधिकृत बनाए गए मकानों की रोकथाम के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

विवश होकर कहना पड़ रहा है कि इन दिनों महानगर की प्रमुख गलियों से होकर जाना असहज तथा असहनीय हो गया है। कारण यह है कि गलियों पर जहाँ-तहाँ लोगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है और उस पर अनाधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं।

कहीं सड़कों पर रेत की ढेर पड़ी हुई है तो कहीं ईंट की पंक्तियाँ सजी हुई हैं। कई जगह सड़कों पर पान-तम्बाकू बेचने वालों ने ईंट की दीवारें उठाकर दुकानें बना रखी हैं। इन सब कारणों से सड़क से गुजरने वाले यात्रियों को दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ता है।

अत: आपसे नम्र निवेदन है कि नगर में अनाधिकृत बने मकानों को हटाने के लिए जल्द से जल्द आदेश दें ताकि महानगर की खूबसूरती बनी रहे।

इसके लिए हम सब आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

अ.ब.स.

अ.ब.स. मोहल्ला

अ.ब.स. नगर। **[5]**

सामान्य त्रुटियाँ

- अधिकांश विद्यार्थी पत्र में सविनय निवेदन, धन्यवाद आदि विनम्रता सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं तथा प्रारूप संबंधी अशुद्धियाँ भी अधिक करते हैं।
- कुछ विद्यार्थी भवदीय के स्थान पर 'आपका भवदीय' या 'आपका आज्ञाकारी' भी लिखकर त्रुटियाँ करते हैं।
- पत्र में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है तथा प्रारूप में छात्रों द्वारा कई बातें दाईं ओर लिखी जाती हैं जो कि उचित नहीं है। पत्र में विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं, जैसे—डेट, डे, थैंक्स आदि।

निवारण

- पत्र की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए।
- पत्र में व्यर्थ की बातों का समावेश नहीं करना चाहिए।
- पत्र में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

6. **(क)** **शरद** : अरे अमित ! तू इस समय यहाँ, मुझे तो आश्चर्य हो रहा है?

अमित : क्यों मैं यहाँ आ नहीं सकता क्या ?

शरद : आ क्यों नहीं सकता, आ सकता है पर इस समय तो भारत-पाकिस्तान का क्रिकेट मैच चल रहा है। उसे छोड़कर तू यहाँ ? तू तो क्रिकेट मैच का दीवाना है।

अमित : सही कहा पर अब तो मजा नहीं आता क्योंकि टीम में सचिन तेंदुलकर नहीं है न।

शरद : हाँ मित्र ठीक कहा, सचिन आखिर सचिन है। कल की-ही बात है कपिल देव कप्तान था और 15-16 साल का स्कूल का छात्र सचिन पाकिस्तान के खिलाफ खेलने आया था।

अमित : हाँ और उसने क्रिकेट के लिए अपनी दसवीं की परीक्षा भी छोड़ दी थी, समय जाते देर नहीं लगती।

शरद : सही कहा। उसके रिटायर होने की घोषणा पर तू कितना रोया था।

अमित : हाँ मित्र! मुझे बहुत दु:ख हुआ था उसके जैसा महान क्रिकेटर सदियों में आता है। उसके रिटायरमेंट के बाद मेरा मन भी क्रिकेट से हट गया है इसलिए मैं अब मैच नहीं देखता। **[2½]**

अथवा

कमल : अरे मित्र नमन! कल तुम कहाँ थे, जानते हो न शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में कल विद्यालय में कितने सुन्दर-सुन्दर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ था?

नमन : हाँ मित्र! जानता हूँ, किन्तु देरी से आने के कारण मैं पीछे बैठा था और तुम आगे।

कमल : अच्छा, मुझे लगा कि तुम नहीं आए। मित्र मुझे तो उन कार्यक्रमों में सबसे अधिक कक्षा आठ के छात्रों द्वारा देशभक्ति के गीत पर किया गया नृत्य बहुत पसंद आया।

नमन : हाँ मित्र! वह भी अच्छा था किन्तु मुझे तो कक्षा दस के विद्यार्थी मोहन द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन पर दी गई जानकारी और लघु भाषण बहुत अच्छा लगा।

कमल : सही कहा, मित्र! तब वास्तव में उन्होंने हमें शिक्षक दिवस मनाने का सही कारण बताया और हमें अपने शिक्षकों का सम्मान करने का संदेश भी दिया।

नमन : हाँ मित्र! मैं प्रण लेता हूँ कि मैं सदैव अपने गुरुओं की आज्ञा का पालन करूँगा और उनका सम्मान करूँगा।

कमल : सत्य कहा मित्र! मैं भी।

(ख) माया : क्या बात है सुधा? कुछ परेशान-सी दिख रही हो?

सुधा : क्या कहूँ माया, बिजली की कटौती से परेशान हूँ।

माया : ठीक कह रही हो बहन, बिजली कब कट जाए, कुछ कह ही नहीं सकते हैं।

सुधा : माया, बिजली न होने से आज तो घर में बूँदभर भी पानी नहीं है। समझ में नहीं आता अब बिना पानी के सारा काम कैसे होगा!

माया : आज सवेरे बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजने में बड़ी परेशानी हुई।

सुधा : यह तो रोज का नियम बन गया है। सुबह-शाम बिजली कट जाने से घरेलू कामों में बड़ी परेशानी होने लगी है।

माया : दिनभर ऑफिस से थककर आओ कि घर कुछ आराम मिलेगा, पर हमारा चैन बिजली ने छीन लिया है।

सुधा : अगले सप्ताह से बच्चों की परीक्षाएँ हैं। मैं तो परेशान हूँ कि उनकी तैयारी कैसे कराऊँगी?

माया : चलो आज बिजली विभाग को शिकायत करते हुए ऑफिस चलेंगे।

सुधा : यह बिल्कुल ठीक रहेगा। **[2½]**

अथवा

अभिभावक : महोदय! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

प्रधानाचार्य : 'हाँ-हाँ' अवश्य आइए और काम बताइए।

अभिभावक : मैं अपने बेटे का दाखिला इस विद्यालय में कराना चाहता हूँ।

प्रधानाचार्य : कौन-सी कक्षा में?

अभिभावक : नवीं कक्षा में।

प्रधानाचार्य : उसने आठवीं कौन-से विद्यालय से उत्तीर्ण की है?

अभिभावक : .....नवकार विद्यालय अशोक गार्डन से।

प्रधानाचार्य : तुम अपने बच्चे को नवकार विद्यालय से यहाँ सरकारी स्कूल में पढ़ाना चाहते हो, ऐसा क्यों?

अभिभावक : मैंने इस विद्यालय का नाम सुना है। यहाँ पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था है और खर्च नाम मात्र का भी नहीं है। यह नवकार विद्यालय वाले तो हमें लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

7. (क)

तीर्थयात्रा

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह बहुत परिश्रमी था। उडुपि के मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करने की उसकी बहुत इच्छा थी, लेकिन धनाभाव के कारण पूरी नहीं हो पाती थी। वह सदैव अपनी इच्छापूर्ति हेतु थोड़ा-थोड़ा धन बचाता रहता। जब उसके पास कुछ रुपए एकत्र हो गए तब वह अपनी पत्नी से रास्ते के लिए भोजन लेकर उडुपि के लिए एक तीर्थयात्रियों के दल के साथ चल दिया। मार्ग में उसने भूख-प्यास और दर्द से कराहते एक बूढ़ा आदमी देखा। हरिहर का मन उसे देख द्रवित हो उठा। पूछने पर पता चला कि बूढ़े व्यक्ति का एक बेटा बहुत बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। यह जानकर हरिहर ने उडुपि जाने से पहले उस बूढ़े व्यक्ति की सहायता करने का निश्चय किया। हरिहर के साथियों ने हरिहर को समझाया कि तुमने बहुत मुश्किल से तीर्थयात्रा के लिए धन एकत्र किया है अगर यह नष्ट हो गया तो शायद तुम फिर कभी नहीं जा पाओगे लेकिन हरिहर अपने निश्चय पर अडिग रहा। वह बूढ़े व्यक्ति के साथ उसके घर गया तथा उन्हें भरपेट भोजन कराया। इसके बाद वह बूढ़े व्यक्ति और उसके बेटे के लिए दवाई लाया। हरिहर की सेवा

से कुछ ही दिनों में सब ठीक हो गया। हरिहर ने बचे हुए पैसे बूढ़े व्यक्ति को कुछ काम-धन्धा शुरू करने के लिए दे दिए। हरिहर अपनी तीर्थयात्रा बीच में छोड़कर वापस घर लौट आया। उसने अपनी पत्नी को सारा वृत्तांत कह सुनाया। पत्नी भी पति के सेवाभाव व दयालुता से बहुत खुश हुई। उस रात हरिहर ने स्वप्न में देखा कि श्रीकृष्ण उससे कह रहे हैं कि हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। जिस बूढ़े व्यक्ति की तुमने सहायता के लिए अपनी वर्षों की इच्छा का त्याग कर दिया वह मैं ही था। बूढ़े व्यक्ति का रूप रखकर तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। इस तरह हरिहर असहाय व्यक्ति की सेवा को सच्ची ईश्वर सेवा मान बिना तीर्थयात्रा के ही पुण्य का भागीदार बन गया। **[2½]**

(ख) **एकता में बल**

एक बार एक शिकारी पक्षियों को पकड़ने के लिए जंगल में गया। वहाँ उसने अपना जाल फैलाया और उस पर दाना बिखेर दिया तथा स्वयं झाड़ियों के पीछे छिप गया। तभी कबूतरों का एक झुण्ड वहाँ से गुजरा। जंगल में दाना बिखरा देख वे उसे चुगने के लिए बेचैन हो नीचे उतरने लगे। तभी उनमें से एक बुद्धिमान कबूतर को कुछ सन्देह हुआ। उसने सभी कबूतरों को सावधान किया कि अवश्य ही कुछ गड़बड़ है अन्यथा जंगल में इतना दाना कहाँ से आया। लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं मानी। वे सभी कबूतर दाना चुगने नीचे उतरे और शिकारी के बिछाए जाल में फँस गए। अब वे उड़ नहीं पा रहे थे। उन्होंने बहुत प्रयास किया लेकिन सब बेकार। सब निराश हो गए। तब बुद्धिमान कबूतर ने उन्हें हिम्मत बँधाते हुए सुझाव दिया कि यदि हम सब एक साथ पूरी ताकत लगाकर उड़ने की कोशिश करें तो इस जाल को अपने साथ लेकर उड़ सकते हैं। तब सबने पूरी ताकत के साथ उड़ने का दम लगाया और वास्तव में वे जाल सहित उड़ चले। यह देख झाड़ियों में छिपा शिकारी उनके पीछे दौड़ा लेकिन कबूतरों की एकता की शक्ति के कारण वह असफल रहा।

गाँव में कबूतरों के मित्र मूषक रहते थे। वे जाल सहित मूषकों के पास पहुँचे। मूषकों ने अपने दाँतों से जाल काट दिया जिससे कबूतर फिर से आज़ाद होकर उड़ने लगे। इस तरह एकता की शक्ति से उन्हें शिकारी की कैद से मुक्ति मिली। **[2½]**

सामान्य त्रुटियाँ

- अधिकांश छात्र कथा-लेखन की विधि से अपरिचित से जान पड़ते हैं।
- छात्र लंबे-लंबे वाक्यों का प्रयोग करते हैं जिससे कथ्य दुरुह हो जाता है।
- कुछ छात्र विषय से भटक जाते हैं और व्यर्थ की बातों को लिखने लगते हैं।

निवारण

- कथा लेखन का कक्षा में अभ्यास करना चाहिए।
- कथा लेखन के समय अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।
- कथा में दोहराव नहीं होना चाहिए तथा उसमें तारतम्यता होनी चाहिए।